# आधुनिक भारत में राजा राम मोहन राय का योगदान

Course - M.A. History, Part II; Paper - XII; Prepared by - Dr. P.K. Poddar

18वीं सदी के अंतिम चरण तक अनेक दृष्टिकोण से हमारी धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था का उतना पतन हो चुका था कि भारत के इतिहास में इसे अन्धकार युग के नाम से जाना जाता है। लेकिन 19वीं सदी में भारतीय समाज को परिस्कृत करने और नया सामाजिक-धार्मिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन प्रारंभ किये गये। यह भारतीय नवजागरण का काल था और राजा राम मोहन राय इस नवयुग के प्रतीक थे। इन्होंने समाज एवं धर्म सुधारों की ज्योति जगायी जो अन्य सुधारकों को मार्ग निर्देशन एवं प्रोत्साहित करती रही।

राम मोहन राय को पुनर्जागरण का 'प्रभात तारा' (Morning Star) कहा जाता है। अनेक विद्वानों ने तो इन्हें 'सुधारकों का आध्यात्मिक पिता', 'नवयुग का अग्रदूत' आदि कहा है। वस्तुतः आधुनिक भारत में राजनीतिक जागृति और धर्म सुधार का आध्यात्मिक आरंभ राम मोहन राय से होता है। उन्होंने अपने राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए अनवरत प्रयास किये। रूढ़िवादी विचारों को तिलांजलि देकर उन्होंने विवेकपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय प्रतिष्ठा और सामाजिक समानता के सिद्धान्त का अनुमोदन किया। वे पाश्चात्य दर्शन से काफी प्रभावित थे। राम मोहन राय के व्यक्तित्व में प्रारंभ से ही हम क्रांतिकारी भावनाओं का प्रस्फुटन पाते हैं। मूर्ति पूजा एवं धर्म तथा समाज के आडंबरों के विरोधी होने के कारण उनकी पिता से अनबन हो गयी और वे घर छोड़कर निकल गये।

1815 ई. में उन्होंने 'आत्मीय सभा' की स्थापना की जिसमें धार्मिक विषयों पर चर्चा होती थी। उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना की, एकेश्वरवाद एवं तर्क पर बल दिया, जाति-प्रथा

एवं छुआछूत की निन्दा की तथा स्त्रियों की दशा सुधारने एवं शैक्षणिक विकास के लिए प्रयत्न किये। अपने विचारों से अन्य व्यक्तियों को परिचित कराने के लिए उन्होंने वेदों और प्रमुख उपनिषदों का बंगाली भाषा में अनुवाद किया। अनेक पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के सहारे भी उन्होंने बंगाल की जनता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। 1820 ई० में उनकी दूसरी पुस्तक प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (Precepts of Jesus) प्रकाशित हुई। 1828 ई० में उन्होंने 'ब्रह्म सभा' स्थापित की, जो बाद में 'ब्रह्म समाज' के नाम से विख्यात हुआ। इस संस्था के द्वारा राजा साहब हिन्दू धर्म को सुधार करने लगे।

राम मोहन राय के धार्मिक विचार क्रान्तिकारी थे। अनेक प्राचीन धर्मग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों का सार एक ही है। वे मूर्तिपूजा और बहुदेववाद के विरोधी और एकेश्वरवाद के समर्थक थे। वे सभी धर्मों की मौलिक समानता और एकता में विश्वास करते थे। वे हिन्दू धर्म में सुधार लाना चाहते थे, मगर हिन्दू धर्म के स्थान पर ईसाई धर्म को थोपे जाने के विरोधी थे। उन्होंने अपने समय की हिन्दुओं द्वारा अपनाये अनेक कर्मकाण्डों की तीव्र आलोचना की। अपने धार्मिक आदर्शों की पूर्ति के उद्देश्य से उन्होंने 1828 ई० में ब्रह्म समाज की स्थापना की। इस समाज के कार्यक्रम में हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई तीनों धर्मों के अच्छे गुणों का समावेश किया गया। वस्तुतः उनका मुख्य उद्देश्य मूर्तिपूजा, बलि-प्रथा, पुरोहितों के आधिपत्य और धार्मिक आडंबरों एवं रूढ़ियों को समाप्त करना था।

एक धर्म सुधारक की भाँति राम मोहन राय समाज-सुधारक के रूप में भी विख्यात हैं। 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज अनेक

कुप्रथाओं और रूढ़ियों से ग्रस्त था। अशिक्षा का प्रचार था और स्त्रियों की दशा अत्यंत ही दयनीय थी। बाल-विवाह, सती-प्रथा, हिन्दू-विधवाओं की दुःखद स्थिति, जातिप्रथा, छुआछूत आदि ने हिन्दू समाज की प्रतिष्ठा घटा दी थी। अतः राम मोहन राय ने समाज सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाये। इस दिशा में उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य था सदियों से चली आ रही अमानवीय सती-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन प्रारंभ करना। उन्होंने शास्त्रों का सहारा लेकर यह दर्शाने की कोशिश की कि धर्मशास्त्रों में भी सती-प्रथा का विरोध किया गया था। उन्होंने व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा इस प्रथा को रोकने की चेष्टा की तथा विलियम बेंटिक को अपना पूर्ण सहयोग दिया। परिणाम स्वरूप 1829 ई० में एक कानून द्वारा इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया। उन्होंने स्त्रियों की स्वतंत्रता एवं समानता की भी माँग की। उन्होंने बहु-विवाह समाप्त करने, विधवाओं की दशा सुधारने, वेश्यावृत्ति को समाप्त करने, स्त्रियों को शिक्षा दिलवाने तथा उन्हें सम्पत्ति में अधिकार दिलवाने का भी प्रयास किया। वे छुआछूत और जाति-प्रथा को भी समाप्त करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने अन्तर्जातीय विवाहों का समर्थन किया।

राम मोहन राय का यह दृढ़ विश्वास था कि भारतीयों की कूपमंडूकता समाप्त किये बिना यथार्थ सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती। यह तब तक संभव नहीं था जब तक कि भारतीयों को आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा से परिचित नहीं कराया जाय। इसलिए उन्होंने अँगरेजी शिक्षा के प्रसार का समर्थन किया। डेविड हेयर को सहयोग देकर उन्होंने 1817 ई० में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना करवायी। उन्होंने अपने खर्च से एक अँगरेजी स्कूल भी 1817 ई० में ही कलकत्ता में स्थापित किया। पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक होने के बावजूद वे

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को भी उजागर करना चाहते थे। इस उद्देश्य से 1825 ई० में कलकत्ता में एक वेदान्त कॉलेज की स्थापना की गयी जहाँ पाश्चात्य दर्शन के साथ-साथ भारतीय विद्या की पढ़ाई की भी व्यवस्था की गयी। शिक्षा प्रसार के साथ-साथ राम मोहन राय ने बंगला साहित्य को भी समृद्ध किया। वेदान्त और उपनिषदों का उन्होंने बंगला में अनुवाद किया। उन्होंने एक बंगला व्याकरण की भी रचना की। उन्होंने अंग्रेजी, फारसी और संस्कृत के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का भी बंगला में अनुवाद करवाया। 1821 ई० में उन्होंने एक साप्ताहिक पत्रिका 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन भी आरम्भ करवाया। उनके इन कार्यों से बंगाल में शिक्षा और साहित्य की पर्याप्त प्रगति हुई।

राम मोहन राय के कुछ राजनीतिक आदर्श भी थे। वे भारतीय स्वतंत्रता के पक्षपाती थे, किन्तु उनके विचारानुसार अभी भारत के निवासी उतने परिपक्व नहीं हो गये थे कि वे शासन को स्वतंत्र रूप से संचालित कर सकें। वे अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से आपसी बातचीत के द्वारा ढूँढना चाहते थे। उनकी गणना ब्रिटिश अधिकारियों के द्वारा की जाती थी। इस तरह हम देखते हैं कि राम मोहन राय एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे।

राम मोहनराय पाश्चात्य दर्शन और अंग्रेजी शासन से अत्यन्त ही प्रभावित थे। वे भारत में अंग्रेजी राज्य को ईश्वर की देन मानते थे। फिर भी उनमें राष्ट्रीय चेतना की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके धार्मिक-सामाजिक सुधार का एक लक्ष्य राजनीतिक उत्थान भी था। उन्होंने भारत के समक्ष उपस्थित ज्वलन्त प्रश्नों पर जनमानस को उद्वेलित करने का प्रयास किया। उन्होंने बंगाल के किसानों को भू-स्वामियों के

अत्याचारों से मुक्त कराने, किसानों की लिए लगान की राशि तय करने, ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक अधिकारों को समाप्त करने, भारतीय वस्तुओं पर से निर्यात शुल्क कम करने, उच्च सेवाओं के भारतीयकरण, न्यायिक स्वतंत्रता एवं समानता, कार्यपालिका और न्यायपालिका की शक्तियों का पृथक्कीकरण, मुकदमों की सुनवाई के लिए जूरी की व्यवस्था, प्रेस की स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता जैसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया।

राम मोहन राय अन्तर्राष्ट्रीय एवं विभिन्न राष्ट्रों के साथ मुक्त सहयोग के विचार के हिमायती थे। इसलिए भारत में रहते हुए भी उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में भरपूर दिलचस्पी ली। उन्होंने विश्व में हो रहे अनेक जगह स्वतंत्रता, जनतंत्र और राष्ट्रीयता के आन्दोलन का समर्थन किया। उदाहरण के लिए 1821 ई की नेपल्स क्रान्ति की विफलता से वे अत्यन्त ही दुःखी एवं उद्वेलित हुए। इसी प्रकार स्पेनिश अमेरिका की क्रान्ति की सफलता (1823) से वे अत्यन्त हर्षित हुए। नेपोलियन के अत्याचार का उन्होंने विरोध किया था। इंग्लैंड में संसदीय सुधार आन्दोलन के प्रति सहानुभूति प्रकट की थी। उन्होंने आयरलैंड के जमींदारों के अत्याचारों की भी सार्वजनिक रूप से निन्दा की। अपने विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य से वे 1830 ई में इंग्लैंड गये और भारत में सुधारों के समर्थन में जनमत तैयार किया। वे एक अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की भी स्थापना करना चाहते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय नवजागरण और समाज-सुधार के क्षेत्र में राम मोहन राय की देन अतुलनीय है। वे भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत एवं आधुनिक

भारत के निर्माता कहे जा सकते हैं। शिक्षा, साहित्य, धर्म, समाज, राष्ट्रीय मामलों के संघर्ष में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रो० बिपन चंद्र ने उन्हें "उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय आकाश के सबसे चमकीले सितारे" के रूप में रखा है। टैगोर के अनुसार "राम मोहन राय ने भारत में आधुनिक युग का उद्घाटन किया।" राम मोहन राय विश्व के महान् विभूतियों में एक थे।